चैत्र नवरात्रि 2020 कब है



नवरात्रि का पर्व देवी शक्ति मां दुर्गा की उपासना का उत्सव है। नवरात्रि के नौ दिनों में देवी शक्ति के नौ अलग(अलग रूप की पूजा(
आराधना की जाती है। एक वर्ष में पांच बार नवरात्र आते हैं, चैत्र, आषाढ़, अश्विन, पौष और माघ नवरात्र। इनमें चैत्र और अश्विन यानि शारदीय नवरात्रि को ही मुख्य माना गया है। इसके अलावा आषाढ़, पौष और माघ गुप्त नवरात्रि होती है। शारदीय नवरात्रि अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक मनायी जाती है। शरद ऋतु में आगमन के कारण ही इसे शारदीय नवरात्रि कहा जाता है।

शारदीय नवरात्रि पर्व हिन्दू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है। इस वर्ष शारदीय नवरात्रि का प्रारंभ एक माह विलंब से हो रहा है। मलमास के कारण इसमें यह देरी हुई है।यह त्योहार 17 अक्तूबर से शुरु हो रहा है। नौ दिनों तक चलने वाले इस पावन उत्सव में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा होती है। माता के भक्त आशीर्वाद पाने के लिए नौ दिनों तक व्रत रखते हैं। नवरात्रि व्रत के नियमानुसार इन दिनों कुछ कार्यों को भूलकर भी नहीं करने चाहिए।

जानें घट स्थापना का शुभ मुहूर्त (Navratri Ghat Sthapna Mahurat 2020)

नवरात्रि का पर्व 17 अक्टूबर से शुरू हो रहा है। पंचांग के अनुसार इस दिन आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि रहेगी। इस दिन घट स्थापना मुहूर्त का समय सुबह 06 बजकर 27 मिनट से 10 बजकर 13 मिनट तक रहेगा। घटस्थापना के लिए अभिजित मुहूर्त सुबह 11बजकर 44 मिनट से 12 बजकर 29 मिनट तक रहेगा |

नवरात्रि के लिए पूजा सामग्री (Navratri Poojan Samagri)

नवरात्रि के व्रत रखने और पूजा करने का तभी लाभ होता है जब सब कार्य विधिपूर्वक किये जाएं। आज हम आपको नवरात्रि के लिए पूजा सामग्री बता रहे हैं। इसके लिए आपको मां दुर्गा की नई तस्वीर, लाल चुन्नी, लाल कपड़ा, गंगा जल, माता का श्रृंगार, आम की पत्तियां, लौंग का जोड़ा, उपले, जौ के बीज, चंदन, नारियल, कपूर, गुलाल, पान के पत्ते,सुपारी और इलायची की आवश्यकता होती है।

घर पर नवरात्रि पूजा विधि (Navratri Ghat Sthapna Pooja Vidhi)

नवरात्रि में सुबह जल्दी उठना चाहिए और नित्यकर्म और स्नान करने के बाद साफ कपड़े पहनें और पूजा घर को साफ करें। इसके बाद नवरात्रि में मां दुर्गा की आराधना करने से पहले सभी तरह की पूजा सामग्रियों को एक जगह एकत्रित कर लें। इसके बाद मां दुर्गा की फोटो को लाल रंग के कपड़े में रखें। फिर पूजा की थाली को सजाएं उसमें सभी तरह की पूजा सामग्री को रखें। मिट्टी के पात्र में जौ के बीज को बोएं और नौ दिनों तक उसमें पानी का छिड़काव करें। नवरात्रि के पहले दिन यानी प्रतिपदा तिथि पर शुभ मुहूर्त में कलश को लाल कपड़े में लपटेकर स्थापित करें। कलश में गंगाजल डाले और आम की पत्तियां रखकर उस पर जटा नारियल रखें।

नवरात्रि में माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा का विधान (Nav Durga ke Nav Roop)

- दिन 1 :17 अक्टूबर

2020 :मां शैलपुत्री पूजा घटस्थापना:यह देवी दुर्गा के नौ रूपों में से प्रथम रूप है। मां शैलपुत्री चंद्रमा को दर्शाती हैं और इनकी पूजा से चंद्रमा से संबंधित दोष समाप्त हो जाते हैं। शैलपुत्री माता पार्वती का ही दूसरा रूप है। इन्हें हिमालय राज की पुत्री कहा जाता है। इनके दाएं हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल होता है तथा यह मां नंदी की सवारी करती है। शक्ति और कर्म इनके प्रतीक हैं।

- दिन 2-18 अक्टूबर

2020 :माँ ब्रह्मचारिणी पूजा :ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार देवी ब्रह्मचारिणी मंगल ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से मंगल ग्रह के बुरे प्रभाव कम होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब मां पार्वती अविवाहित थी तब उन्हेंब्रह्मचारिणी कहा जाता था। यानि कि यह दिन भी मां पार्वती का ही होता है। ये मां श्वेत वस्त्र धारण किए हुए होती हैं और इनके दाएं हाथ में कमण्डल और बाएं हाथ में जपमाला होती है। देवी का स्वरूप अत्यंत तेज़ और ज्योतिर्मय है। ये मां शांति और सकारात्मकता की प्रतीक है।

- दिन 3-19 अक्टूबर 2020

:माँ चंद्रघंटा पूजा :देवी चंद्रघण्टा शुक्र ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से शुक्र ग्रह के बुरे प्रभाव कम होते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि माँ पार्वती और भगवान शिव के विवाह के दौरान उनका यह नाम पड़ा था। मां चंद्रघण्टा का प्रिय रंग पीला होता है इसलिए इस दिन पीले रंग धारण किए जाते हैं। यह रंग साहस का प्रतीक है।

- दिन 4 -20 अक्टूबर 2020

:माँ कूष्मांडा पूजा :माँ कूष्माण्डा सूर्य का मार्गदर्शन करती हैं अतः इनकी पूजा से सूर्य के कुप्रभावों से बचा जा सकता है। मां कुष्मांडा शेर की सवारी करती हैं और उनकी आठ भुजाएं होती हैं। ऐसी मान्यता है कि पृथ्वी पर होने वाली हरियाली माँ के इसी रूप के कारण है। इस दिन हरे कपड़े पहनने को शुभ माना जाता है।

- दिन 5 :21 अक्टूबर 2020

:माँ स्कंदमाता पूजा :देवी स्कंदमाता बुध ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से बुध ग्रह के बुरे प्रभाव कम होते हैं। भगवान कार्तिकेय का एक नाम स्कंद भी है। इनकी चार भुजाएं होती हैं। माता अपने पुत्र को लेकर शेर की सवारी करती है। इस दिन ग्रे रंग के कपड़े पहनने की मान्यता है।

● दिन 6-22 अक्टूबर 2020

:माँ कात्यायनी पूजा :देवी कात्यायनी बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से बृहस्पति के बुरे प्रभाव कम होते हैं। माता कात्यायिनी साहस का प्रतीक हैं। ये शेर की सवारी करती हैं और उनकी चार भुजाएं हैं। इस दिन केसरिया रंग का महत्व होता है।

● दिन 7 :23 अक्टूबर 2020

:माँ कालरात्रि पूजा :देवी कालरात्रि शनि ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से श नि के बुरे प्रभाव कम होते हैं। और ऐसा कहा जाता है कि जब मां पार्वती ने शुंभ(निशुंभ नामक दो राक्षसों का वध किया था तब उनका रंग काला हो गया था। इसके बा वजूद इस दिन काले के बजाय सफेद रंग पहना जाता है।

● दिन 8 :24 अक्टूबर 2020

:माँ महागौरी पूजा :देवी महागौरी राहु ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से राहु के बुरे प्रभाव कम होते हैं। माता का यह रूप शांति और ज्ञान की देवी का प्रतीक है। इ स दिन पिंक कपड़े पहने जाते हैं।

● दिन 9 -25 अक्टूबर 2020

:माँ सिद्धिदात्री पूजा :देवी सिद्धिदात्री केतु ग्रह को नियंत्रित करती हैं। देवी की पूजा से केतु के बुरे प्रभाव कम होते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन सच्चे मन से पूजा करने वा लों को सिद्धि प्राप्त होती है। मां सिद्धिदात्री कमल के फूल पर विराजमान हैं और उन की चार भुजाएं होती हैं।

9 दुर्गा के बीज मंत्र (Nav Durga Beej Mantra)

नवरात्रि के समय में मां दुर्गा के बीज मंत्रों का जाप कल्याणकारी और प्रभावी माना जा ता है। इस नवरात्रि आप 9 दुर्गा के बीज मंत्रों का जाप कर सकते हैं। इसमें शब्दों के उ च्चारण का विशेष ध्यान रखा जाता है। आइए मां दुर्गा के 9 स्वरुपों के बीज मंत्रों के बारे में जानते हैं।

1. शैलपुत्री: ह्रीं शिवायै नम:।

2. ब्रह्मचारिणी: ह्रीं श्री अम्बिकायै नम:।

3. चन्द्रघण्टा: ऐं श्रीं शक्तयै नम:।

4. कूष्मांडा: ऐं ह्री देव्यै नम:।

5. स्कंदमाता: ह्रीं क्लीं स्वमिन्यै नम:।

6. कात्यायनी: क्लीं श्री त्रिनेत्रायै नम:।

7. कालरात्रि: क्लीं ऐं श्री कालिकायै नम:।

8. महागौरी: श्री क्लीं ह्रीं वरदायै नम:।

9. सिद्धिदात्री: ह्रीं क्लीं ऐं सिद्धये नम:।

चैत्र नवरात्रि की कथा (Chaitra Navratri Ki Katha/ Story)

एक नगर में एक ब्राह्मण रहा करता था। वह मां भगवती दुर्गा का परम भक्त था। उस की एक कन्या थी। जिसका नाम सुमति था। ब्राह्मण नियम पूर्वक प्रतिदिन दुर्गा जी की पूजा और यज्ञ किया करता था। ब्राह्मण की बेटी भी प्रतिदिन इस पूजा में भाग लिया करती थी। एक दिन सुमति खेल में व्यस्ति हो गई और मां दुर्गा की पूजा में शामिल नहीं हुई। यह देखकर उसके पिता को अत्यंत क्रोध आ गया और उसने अपनी पुत्री से कहा वह उसका विवाह किसी दरिद्र और कोढ़ी से करा देगा। पिता की बात सुनकर उसकी बेटी को बहुत दुख हुआ। उसने पिता के द्वारा क्रोध में कही गई बात को स्वीकार कर लिया। अपनी बात के अनुसार उसके पिता ने अपने बेटी का विवाह एक दरिद्र और कोढ़ी व्यक्ति से करा दिया। सुमति अपने पति के साथ विवाह करके चली गई। उसके पति का घर न होने के कारण उसे वन में ही रात बड़ी मुश्किल से बीतानी पड़ी। उस कन्या की यह दशा देखकर मां भगवती उसके द्वारा किए गए पिछले जन्म के प्रभाव से प्रकट हो गईं और बोली हे कन्या मैं तुमसे अत्याधिक प्रसन्न हूं। इसलिए तुम मुझसे कुछ भी मांग सकती हो। इस पर सुमति बोली की मां आप मुझ पर किस बात से प्रसन्न हैं। तब मां दुर्गा ने बताया कि पिछले जन्म में तुम एक भील की पत्नी थीं। एक दिन तुम्हारे पति की चोरी के कारण तुम्हें और तुम्हारे पति को जेल में बंद कर दिया गया था। उन सिपाहियों ने तुम्हें और तुम्हारे पति को कुछ भी खाने के लिए नहीं दिया था। जिसके कारण तुम्हारा नवरात्रि का व्रत हो गया था। इसी वजह से मैं तुमसे प्रसन्न हूं। तुम कुछ भी मांग सकती हो। इस पर उस कन्या ने कहा कि मां कृपा करके आप मेरे पति को कोढ़ दूर कर दीजिए। माता ने उसके कन्या के पति को रोग से मुक्त कर दिया। इसलिए नवरात्रि का व्रत करने वाले व्यक्ति को उसके हर जन्म में शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

मां दुर्गा के 108 नाम (Maa Durga Ke 108 Naam)

1. सती:अग्नि में जल कर भी जीवित होने वाली

2. साध्वी:आशावादी

3. भवप्रीता:भगवान शिव पर प्रीति रखने वाली

4. भवानी:ब्रह्मांड में निवास करने वाली

5. भवमोचनी:संसारिक बंधनों से मुक्त करने वाली

6. आर्या:देवी

7. दुर्गा:अपराजेय

8. जया:विजयी

9. आद्य:शुरुआत की वास्तविकता

10. त्रिनेत्र:तीन आंखों वाली

11. शूलधारिणी:शूल धारण करने वाली

12. पिनाकधारिणी:शिव का त्रिशूल धारण करने वाली

13. चित्रा:सुरम्य, सुंदर

14. चण्डघण्टा:प्रचण्ड स्वर से घण्टा नाद करने वाली, घंटे की आवाज निकालने वाली

15. सुधा:अमृत की देवी

16. मन:मनन(शक्ति

17. बुद्धि:सर्वज्ञाता

18. अहंकारा:अभिमान करने वाली

19. चित्तरूपा:वह जो सोच की अवस्था में है

20. चिता:मृत्युशय्या

21. चिति:चेतना

22. सर्वमन्त्रमयी:सभी मंत्रों का ज्ञान रखने वाली

23. सत्ता:सत(स्वरूपा, जो सब से ऊपर है

24. सत्यानंद स्वरूपिणी:अनन्त आनंद का रूप

25. अनन्ता:जिनके स्वरूप का कहीं अंत नहीं

26. भाविनी:सबको उत्पन्न करने वाली, खूबसूरत औरत

27. भाव्या:भावना एवं ध्यान करने योग्य

28. भव्या:कल्याणरूपा, भव्यता के साथ

29. अभव्या:जिससे बढ़कर भव्य कुछ नहीं

30. सदागति:हमेशा गति में, मोक्ष दान

31. शाम्भवी:शिवप्रिया, शंभू की पत्नी

32. देवमाता:देवगण की माता

33. चिन्ता:चिन्ता

34. रत्नप्रिया:गहने से प्यार करने वाली

35. सर्वविद्या:ज्ञान का निवास

36. दक्षकन्या:दक्ष की बेटी

37. दक्षयज्ञविनाशिनी:दक्ष के यज्ञ को रोकने वाली

38. अपर्णा:तपस्या के समय पत्ते को भी न खाने वाली

39. अनेकवर्णा:अनेक रंगों वाली

40. पाटला:लाल रंग वाली

41. पाटलावती:गुलाब के फूल

42. पट्टाम्बरपरीधाना:रेशमी वस्त्र पहनने वाली

43. कलामंजीरारंजिनी:पायल को धारण करके प्रसन्न रहने वाली

44. अमेय:जिसकी कोई सीमा नहीं

45. विक्रमा:असीम पराक्रमी

46. क्रूरा:दैत्यों के प्रति कठोर

47. सुन्दरी:सुंदर रूप वाली

48. सुरसुन्दरी:अत्यंत सुंदर

49. वनदुर्गा:जंगलों की देवी

50. मातंगी:मतंगा की देवी

51. मातंगमुनिपूजिता:बाबा मतंगा द्वारा पूजनीय

52. ब्राह्मी:भगवान ब्रह्मा की शक्ति

53. माहेश्वरी:प्रभु शिव की शक्ति

54. इंद्री:इंद्र की शक्ति

55. कौमारी:किशोरी

56. वैष्णवी:अजेय

57. चामुण्डा:चंड और मुंड का नाश करने वाली

58. वाराही:वराह पर सवार होने वाली

59. लक्ष्मी:सौभाग्य की देवी

60. पुरुषाकृति:वह जो पुरुष धारण कर ले

61. विमिलौत्त्कार्शिनी:आनन्द प्रदान करने वाली

62. ज्ञाना:ज्ञान से भरी हुई

63. क्रिया:हर कार्य में होने वाली

64. नित्या:अनन्त

65. बुद्धिदा:ज्ञान देने वाली

66. बहुला:विभिन्न रूपों वाली

67. बहुलप्रेमा:सर्व प्रिय

68. सर्ववाहनवाहना:सभी वाहन पर विराजमान होने वाली

69. निशुम्भशुम्भहननी:शुम्भ, निशुम्भ का वध करने वाली

70. महिषासुरमर्दिनि:महिषासुर का वध करने वाली

71. मसुकैटभहंत्री:मधु व कैटभ का नाश करने वाली

72. चण्डमुण्ड विनाशिनि:चंड और मुंड का नाश करने वाली

73. सर्वासुरविनाशा:सभी राक्षसों का नाश करने वाली

74. सर्वदानवघातिनी:संहार के लिए शक्ति रखने वाली

75. सर्वशास्त्रमयी:सभी सिद्धांतों में निपुण

76. सत्या:सच्चाई

77. सर्वास्त्रधारिणी:सभी हथियारों धारण करने वाली

78. अनेकशस्त्रहस्ता:कई हथियार धारण करने वाली

79. अनेकास्त्रधारिणी:अनेक हथियारों को धारण करने वाली

80. कुमारी:सुंदर किशोरी

81. एककन्या:कन्या

82. कैशोरी:जवान लड़की

83. युवती:नारी

84. यति:तपस्वी

85. अप्रौढा:जो कभी पुराना ना हो

86. प्रौढा:जो पुराना है

87. वृद्धमाता:शिथिल

88. बलप्रदा:शक्ति देने वाली

89. महोदरी:ब्रह्मांड को संभालने वाली

90. मुक्तकेशी:खुले बाल वाली

91. घोररूपा:एक भयंकर दृष्टिकोण वाली

92. महाबला:अपार शक्ति वाली

93. अग्निज्वाला:मार्मिक आग की तरह

94. रौद्रमुखी:विध्वंसक रुद्र की तरह भयंकर चेहरा

95. कालरात्रि:काले रंग वाली

96. तपस्विनी:तपस्या में लगे हुए

97. नारायणी:भगवान नारायण की विनाशकारी रूप

98. भद्रकाली:काली का भयंकर रूप

99. विष्णुमाया:भगवान विष्णु का जादू

100. जलोदरी:ब्रह्मांड में निवास करने वाली

101. शिवदूती:भगवान शिव की राजदूत

102. करली:हिंसक

103. अनन्ता:विनाश रहित

104. परमेश्वरी:प्रथम देवी

105. कात्यायनी:ऋषि कात्यायन द्वारा पूजनीय

106. सावित्री:सूर्य की बेटी

107. प्रत्यक्षा:वास्तविक

108.ब्रह्मवादिनी:वर्तमान में हर जगह वास करने वाली

मां दुर्गा की आरती जय अम्बे गौरी

(Maa Durga Ki Aarti Jai Ambe Gauri)

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी.....
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री।। जय अम्बे गौरी,...।
मांग सिंदूर बिराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चंद्रबदन नीको।। जय अम्बे गौरी,...।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गल माला, कंठन पर साजै।। जय अम्बे गौरी,...।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी।
सुर-नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी।। जय अम्बे गौरी,...।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर, राजत समज्योति।। जय अम्बे गौरी,...।
शुम्भ निशुम्भ बिडारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। जय अम्बे गौरी,...।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शौणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। जय अम्बे गौरी,...।
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। जय अम्बे गौरी,...।
चौंसठ योगिनि मंगल गावैं, नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजत डमरू।। जय अम्बे गौरी,...।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता।। जय अम्बे गौरी,...।
भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्परधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। जय अम्बे गौरी,...।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। जय अम्बे गौरी,...।
अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै।। जय अम्बे गौरी,...।

मां दुर्गा की आरती (माँ !जगजननी जय !जय!!)

(Maa Durga Ki Aarti Maa Jag janni Jay Jay)

जगजननी जय !जय!! (माँ !जगजननी जय !जय!!)
भयहारिणी, भवतारिणी ,भवभामिनि जय ! जय !!
माँ जग जननी जय जय ....
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुंदर पर – शिव सुर-भूपा ।। माँ जग ....
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनंत अगोचर अज आनंदराशि।। माँ जग ....
अविकारी , अघहारी, अकल , कलाधारी ।
कर्ता विधि , भर्ता हरि , हर सँहारकारी ।। माँ जग...........
तू विधिवधू, रमा ,तू उमा , महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू। जननी ,जाया ।। माँ जग ....
राम , कृष्ण तू, सीता , व्रजरानी राधा ।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम , हारिणी सब बाधा ।। माँ जग.........
दश विद्या , नव दुर्गा , नानाशास्त्रकरा ।
अष्टमात्रका ,योगिनी , नव नव रूप धरा ।। माँ जग ....
तू परधामनिवासिनि , महाविलासिनी तू ।
तू ही श्मशानविहारिणि , ताण्डवलासिनि तू ।।
माँ जग जननी जय जय ....
सुर – मुनि – मोहिनी सौम्या तू शोभा धारा ।
विवसन विकट -सरूपा , प्रलयमयी धारा ।। माँ जग ....
तू ही स्नेह – सुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही , तू ही अस्थि- तना ।।माँ जग ....
मूलाधारनिवासिनी , इह – पर – सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली , कमला तू वरदे ।। माँ जग ....
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी ।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी ।। माँ जग ....
हम अति दीन दुखी मा ! विपत – जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी , पर बालक तेरे ।। माँ जग ....
निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि ! चरण – शरण दीजै ।।
माँ जग जननी जय जय , माँ जग जननी जय जय

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र ;-

दुर्गा सप्तशती में वर्णित सिद्ध कुंजिका स्तोत्र एक अत्यंत चमत्कारिक और तीव्र प्रभाव दिखाने वाला स्तोत्र है। जो लोग पूरी दुर्गा सप्तशती का पाठ नहीं कर सकते वे केवल कुंजिका स्तोत्र का पाठ करेंगे तो उससे भी संपूर्ण दुर्गा सप्तशती का फल मिल जाता है। जीवन में किसी भी प्रकार के अभाव, रोग, कष्ट, दुख, दारिद्रय और शत्रुओं का नाश करने वाले सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ नवरात्रि में अवश्य करना चाहिए। लेकिन इस स्तोत्र का पाठ करने में कुछ सावधानियां भी हैं, जिनका ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

कुंजिका स्तोत्र का पाठ वैसे तो किसी भी माह, दिन में किया जा सकता है, लेकिन नवरात्रि में यह अधिक प्रभावी होता है। कुंजिका स्तोत्र साधना भी होती है, लेकिन यहां हम इसकी सर्वमान्य विधि का वर्णन कर रहे हैं। नवरात्रि के प्रथम दिन से नवमी तक प्रतिदिन इसका पाठ किया जाता है। इसलिए साधक प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नानादि दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर अपने पूजा स्थान को साफ करके लाल रंग के आसन पर बैठ जाए। अपने सामने लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर देवी दुर्गा की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें। सामान्य पूजन करें।

अपनी सुविधानुसार तेल या घी का दीपक लगाए और देवी को हलवे या मिष्ठान्न् का नैवेद्य लगाएं। इसके बाद अपने दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प, एक रुपए का सिक्का रखकर नवरात्रि के नौ दिन कुंजिका स्तोत्र का पाठ संयम-नियम से करने का संकल्प लें। यह जल भूमि पर छोड़कर पाठ प्रारंभ करें। यह संकल्प केवल पहले दिन लेना है। इसके बाद प्रतिदिन उसी समय पर पाठ करें।

धन लाभ जिन लोगों को सदा धन का अभाव रहता हो। लगातार आर्थिक नुकसान हो रहा हो। बेवजह के कार्यों में धन खर्च हो रहा हो उन्हें कुंजिका स्तोत्र के पाठ से लाभ होता है। धन प्राप्ति के नए मार्ग खुलते हैं। धन संग्रहण बढ़ता है।

शत्रु मुक्ति शत्रुओं से छुटकारा पाने और मुकदमों में जीत के लिए यह स्तोत्र किसी चमत्कार की तरह काम करता है। नवरात्रि के बाद भी इसका नियमित पाठ किया जाए तो जीवन में कभी शत्रु बाधा नहीं डालते। कोर्ट-कचहरी के मामलों में जीत हासिल होती है।

रोग मुक्ति दुर्गा सप्तशती के संपूर्ण पाठ जीवन से रोगों का समूल नाश कर देते हैं। कुंजिका स्तोत्र के पाठ से न केवल गंभीर से गंभीर रोगों से मुक्ति मिलती है, बल्कि रोगों पर होने वाले खर्च से भी मुक्ति मिलती है।

कर्ज मुक्ति यदि किसी व्यक्ति पर कर्ज चढ़ता जा रहा है। छोटी-छोटी जरूरतें पूरी करने के लिए कर्ज लेना पड़ रहा है, तो कुंजिका स्तोत्र का नियमित पाठ जल्द कर्ज मुक्ति करवाता है।

सुखद दांपत्य जीवन दांपत्य जीवन में सुख-शांति के लिए कुंजिका स्तोत्र का नियमित पाठ किया जाना चाहिए। आकर्षण प्रभाव बढ़ाने के लिए भी इसका पाठ किया जाता है।

देवी दुर्गा की आराधना, साधना और सिद्धि के लिए तन, मन की पवित्रता होना अत्यंत आवश्यक है। साधना काल या नवरात्रि में इंद्रिय संयम रखना जरूरी है। बुरे कर्म, बुरी वाणी का प्रयोग भूलकर भी नहीं करना चाहिए। इससे विपरीत प्रभाव हो सकते हैं।

कुंजिका स्तोत्र का पाठ बुरी कामनाओं, किसी के मारण, उच्चाटन और किसी का बुरा करने के लिए नहीं करना चाहिए। इसका उल्टा प्रभाव पाठ करने वाले पर ही हो सकता है।

साधना काल में मांस, मदिरा का सेवन न करें। मैथुन के बारे में विचार भी मन में न लाएं।

श्री दुर्गा सप्तशती में से हम आपको एक एसा पाठ बता रहे हैं, जिसके करने से आपकी सारी समस्याएं दूर हो जाएंगी। इस पाठ को करने के बाद आपको किसी अन्य पाठ की आवश्यकता नहीं होगी। यह पाठ है..सिद्धकुंजिकास्तोत्रम्। समस्त बाधाओं को शांत करने, शत्रु दमन, ऋण मुक्ति, करियर, विद्या, शारीरिक और मानसिक सुख प्राप्त करना चाहते हैं तो सिद्धकुंजिकास्तोत्र का पाठ अवश्य करें। श्री दुर्गा सप्तशती में यह अध्याय सम्मिलित है। यदि समय कम है तो आप इसका पाठ करके भी श्रीदुर्गा सप्तशती के संपूर्ण पाठ जैसा ही पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। नाम के अनुरूप यह सिद्ध कुंजिका है। जब किसी प्रश्न का उत्तर नहीं मिल रहा हो, समस्या का समाधान नहीं हो रहा हो, तो सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करिए। भगवती आपकी रक्षा करेंगी।

भगवान शंकर कहते हैं कि सिद्धकुंजिका स्तोत्र का पाठ करने वाले को देवी कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास और यहां तक कि अर्चन भी आवश्यक नहीं है। केवल कुंजिका के पाठ मात्र से दुर्गा पाठ का फल प्राप्त हो जाता है।

इसके पाठ मात्र से मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन आदि उद्देश्यों की एक साथ पूर्ति हो जाती है। इसमें स्वर व्यंजन की ध्वनि है। योग और प्राणायाम है।

संक्षिप्त मंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे॥ (सामान्य रूप से हम इस मंत्र का पाठ करते हैं लेकिन संपूर्ण मंत्र केवल सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में है)

संपूर्ण मंत्र यह है

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ऊं ग्लौं हुं क्लीं जूं स: ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

सिद्ध कुंजिका स्तोत्र को अत्यंत सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। प्रतिदिन की पूजा में इसको शामिल कर सकते हैं। लेकिन यदि अनुष्ठान के रूप में या किसी इच्छाप्राप्ति के लिए कर रहे हैं तो आपको कुछ सावधानी रखनी होंगी।

1 संकल्प: सिद्ध कुंजिका पढ़ने से पहले हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प करें। मन ही मन देवी मां को अपनी इच्छा कहें।

2 जितने पाठ एक साथ (1, 2, 3, 5. 7. 11) कर सकें, उसका संकल्प करें। अनुष्ठान के दौरान माला समान रखें। कभी एक कभी दो कभी तीन न रखें।

3 सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के अनुष्ठान के दौरान जमीन पर शयन करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।

4 प्रतिदिन अनार का भोग लगाएं। लाल पुष्प देवी भगवती को अर्पित करें।

5 सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में दशों महाविद्या, नौ देवियों की आराधना है।

सिद्धकुंजिका स्तोत्र के पाठ का समय: रात्रि 9 बजे करें तो अत्युत्तम।

2 रात को 9 से 11.30 बजे तक का समय रखें।

लाल आसन पर बैठकर पाठ करें, दीपक घी का दीपक दायें तरफ और सरसो के तेल का दीपक बाएं तरफ रखें। अर्थात दोनों दीपक जलाएं

किस इच्छा के लिए कितने पाठ करने हैं

1 विद्या प्राप्ति के लिए....पांच पाठ (अक्षत लेकर अपने ऊपर से तीन बार घुमाकर किताबों में रख दें)

2 यश-कीर्ति के लिए.... पांच पाठ (देवी को चढ़ाया हुआ लाल पुष्प लेकर सेफ आदि में रख लें)

3 धन प्राप्ति के लिए....9 पाठ (सफेद तिल से अग्यारी करें)

4 मुकदमे से मुक्ति के लिए...सात पाठ (पाठ के बाद एक नींबू काट दें। दो ही हिस्से हों ध्यान रखें। इनको बाहर अलग-अलग दिशा में फेंक दें)

5 ऋण मुक्ति के लिए....सात पाठ (जौं की 21 आहुतियां देते हुए अग्यारी करें। जिसको पैसा देना हो या जिससे लेना हो, उसका बस ध्यान कर लें)

6 घर की सुख-शांति के लिए...तीन पाठ (मीठा पान देवी को अर्पण करें)

7 स्वास्थ्यके लिए...तीन पाठ (देवी को नींबू चढाएं और फिर उसका प्रयोग कर लें)

8 शत्रु से रक्षा के लिए..., 3, 7 या 11 पाठ (लगातार पाठ करने से मुक्ति मिलेगी)

9 रोजगार के लिए...3,5, 7 और 11 (एच्छिक) (एक सुपारी देवी को चढाकर अपने पास रख लें)

10 सर्वबाधा शांति- तीन पाठ (लोंग के तीन जोड़े अग्यारी पर चढ़ाएं या देवी जी के आगे तीन जोड़े लोंग के रखकर फिर उठा लें और खाने या चाय में प्रयोग कर लें।

श्री गणेशाय नमः ।

ॐ अस्य श्रीकुञ्जिकास्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीत्रिगुणात्मिका देवता, ॐ ऐं बीजं, ॐ ह्रीं शक्तिः, ॐ क्लीं कीलकम्, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

शिव उवाच

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।

येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥1॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।

न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥2॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।

अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥3॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।

मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।

पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥4॥

अथ मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे। ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा

॥ इति मंत्रः॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।

नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषामर्दिनि ॥1॥

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥2॥
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥3॥
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥4॥
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिणी ॥5॥
धां धीं धू धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देविशां शीं शूं मे शुभं कुरु॥6॥
हुं हु हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥7॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा॥8॥
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिंकुरुष्व मे॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥
यस्तु कुंजिकया देविहीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥
। इति श्रीरुद्रयामले गौरीतंत्रे शिवपार्वतीसंवादे कुंजिकास्तोत्रं संपूर्णम् ।

गुप्तसप्तशती-;-

ॐ ब्रींहस्ते-ब्रीं वेणु-ब्रीं-, स्तुतबटुकैर्ह्रां गणेशस्य माता।-सुर-
स्वानन्दे नन्दरुपे-, अनहतनि-रते, मुक्तिदे मुक्तिमार्गे।।-
हंसः सोहं विशाले, वलयहसे-गति-, सिद्धदेवी समस्ता।-
हींलोके-हीं सिद्ध-हीं-, कचविपुले-रुचि-, वीर भद्रे नमस्ते।।-1

ॐ ह्रींकारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्डमुण्डौ प्रचण्डे।-
खांपाणे-खां खड्ग-खां-, ध्रकध्रक ध्रकिते-, उग्ररुपे स्वरुपे-।।
हुँनादे-हुँ हुँकांर-, गगनतले-भुवि-, व्यापिनी व्योमरुपे।-
हंनादे-हं हंकार-, सुरनमिते-गण-, चण्ड रुपे नमस्ते।।-2
ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रांरुपे-घ्रां घोर-घ्रां-, घघघटिते-घघ-, घर्घरे घोररावे।।-
निर्मांसे काकजंघे-, घसितनखा-नख-, धूम्रनेत्रे।-नेत्रे त्रि-
हस्ताब्जे शूलमुण्डे-, कुलकुल ककुले-, सिद्ध हस्ते नमस्ते।।-3
ॐ क्रींक्रीं ऐं कुमारी-क्रीं-, कुहमखिले-कुह-, कोकिलेनानुरागे।
मुद्रारेखा-त्रि-संज्ञ-, कुरुकुरु सततं-, श्री महामारि गुह्ये।।-
तेजांगे सिद्धिनाथे-, मनचले-पवन-, नैव आज्ञानिधाने।-
ऐंकारे रात्रिमध्ये-, स्वपितजने-पशु-, तत्र कान्ते नमस्ते।। 4
ॐ व्रांव्रूं व्रैं कवित्वे-व्रीं-, दहनरुपेण चक्रे।-गते रुक्मि-पुर-
त्रिःशक्तया-, युक्तवर्णादिक-, करनमिते-, दादिवं पूर्ववर्णे।।-
ह्रींराजे-स्थाने काम-, ज्वलज्वल ज्वलिते-, कोशिनि कोशप-त्रे।
स्वच्छन्दे कष्टनाशे-, सुरवपुषे-वर-, गुह्य मुण्डे नमस्ते।।-5
ॐ घ्रांतुण्डे-घ्रूं घोर-घ्रीं-, घघघोषे।-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्चचक्रे-, रररमिते-रर-, सर्वज्ञाने प्रधाने।।-
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुगम-जुग जजुगे म्लीं पदे काल-ुण्डे।
सर्वांगे रक्तवरे-कर-मथन-धारा-, वज्र दण्डे नमस्ते।।-6
ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामनमिते-, गगन गडस्वरुपे।-योनि-गडे गुह्य-
वज्रांगे, वज्रहस्ते-, सुरवरदे-पति-, मत्तरुढे।।-मातंग-
स्वस्तेजे, शुद्धदेहे-, लललिते-लल-, छेदिते पाशजाले।-
किण्डल्याकाररुपे-, वृष वृषभध्वजे-, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते।। 7
ॐ हुँ हुँ हुंकारनादे-, विषमवशकरे-, यक्षनाथे।-वैताल-
सुसिद्धैः-सिद्धयर्थे सु-, ठठठठठः-ठठ-, सर्वभक्षे प्रचण्डे।।-

जूं सः सौं शान्तिहरे-मृत-कर्मेऽमृत-, निःसमेसं समुद्रे।
देवि, त्वं साधकानां, भवभव वरदे-, भद्र काली नमस्ते।।-8
ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराहस्वरुपा।-
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री।।
ऐं ह्रीं क्लींकारभूते-, वितलतले-तल-, भूमार्गे।-स्वर्ग तले-
पाताले शैलश्रृंगे-, हरिभुवने-हर-, सिद्ध चण्डी नमस्ते।।-9
हं लं क्षं शौण्डिरुपे-, शमित भवभये-, सर्वविघ्ने।-विघ्नान्त-
गां गीं गूं गैं षडंगे, गगनगते-गति-, सिद्धिदे सिद्धसाध्ये।।-
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसतिवदने-, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।
हां हूं गां गीं गणेशी, गजजननी-मुख-, त्वां महेशीं नमामि।। 10

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -1 शाबर मंत्र सिद्धि

इस भाग में आप शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो सम्बन्धी रहस्यों, बारीकियो को समझ पाएंगे और शाबर मन्त्रो के उद्गम, विकास, प्रचार व् सिद्धि, प्रयोग, जप नियम, सीमायें आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते है| और अगर आप एक शाबर मन्त्र साधक है या आपका ऐसा ही विचार है कि शाबर मन्त्र साधना करने का तो यह पुस्तक आपके लिए बहुत ही जरुर व् अटाल्य है जिसका की अध्ययन आपको जरुर ही करना चाहिए |

आपको कोई गुरु नही मिल रहे होगे और आप साधना करने से वंचित हो रहे होगे, आप ने कई बार शाबर मन्त्रो की साधनाए की होगी और शायद आप सफलता नही पा सके या सफलता भी मिली तो वो भी कुछ ही समय के लिए | ऐसा क्यों हुआ? कहाँ कमी रह गयी? या क्या गलती हो गयी? मन्त्र सिद्ध क्यों नही हो रहा? ऐसी ही अनेक बातो के विस्तार से समझाया गया है जो की आपको एक सफल साधक बनाने में अहम् भूमिका निभाएगी |
यदि आप शबर मंत्र तलाशने वाले हैं या आपके पास एक ही विचार है कि शबर मंत्र की खेती की जानी है, तो यह पुस्तक आपके लिए और अटल फंड के फंड के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, जिसे आपको पढ़ना चाहिए।
क्या आप एक उचित शिक्षक हो रहे हैं? आप साधना करना चाहते हैं लेकिन क्या आप अभ्यास से वंचित हैं?
कई बार आप शबर मंत्र सिखाते थे और आप सफल नहीं हो सके?
यदि सफलता भी मिलती है, तो थोड़ी देर के लिए?
क्या आप साधना के दौरान लड़ना शुरू करते हैं?
साधना करने के बाद, परिणाम शून्य रहता है?
उपलब्धि हासिल नही कर सके?
ऐसा क्यों हुआ?
कमी कहाँ है?
क्या गलत है
क्या मंत्र सिद्ध नहीं हो रहा है? ऐसे कई बयान विस्तार से समझाए गए है, जो एक केवल एक गुरु ही अपने शिष्य को बता सकता है, हर कोई उसे प्राप्त नही कर सकता। यह पीडीएफ फ़ाइल व्यावहारिक तरीके से बनाई गई है, ताकि आपको समझने में कोई समस्या न हो और आप इसे पूरी तरह से महसूस कर सकें | इन मंत्रों के सभी मंत्र, यंत्र, यंत्र, कार्यवाही और उनके तरीकों को आज के चरम समय को देखकर हाइलाइट किया गया है, ताकि आम लोग जो भी कोई अन्य काम करते है वे भगत लोग , इस ग्रामीण शक्ति का लाभ उठा सकते हैं। आपने आज तक कई किताबें पढ़ी हैं, जिसमें इस तरह के तरीकों का विवरण, जप और पूजा सामग्री , समय अवधि, दी जाती है कि आप केवल पढ़ने के बाद ही टूट जाते हैं और उन पुस्तकों में लिखी सभी बातो का पालन करना एक आम आदमी के लिए सम्भव भी नही होता , लेकिन इन पुस्तकों में सभी विधियां सरल हैं |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 276 / -

शाबर मंत्र संग्रह भाग -2 शारीरिक रोग निवारण

इस भाग में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके द्वारा आप मनुष्य व पालतू पशूओं जैसे गाय, भैंस, बकरी आदि के भिन्न भिन्न रोगों का भी इलाज इसी पुस्तक में दिया गया हैं| जैसे शारीरिक कष्ट, बीमारी, सन्निपात, बबासीर, पीलिया, कन्ठबेल फोड़े पुन्सी, पशुओ का दूध कम होना या ना देना, पशुओ का पैर

मारना, और भी कई बीमारियों का इस पुस्तक में तन्त्र मन्त्र व् टोटके आधारित इलाज दिया गया हैं | शारीरिक पीड़ा बनी रहती है ? शरीर दुखता है ? साथ ही गर्भावस्था के दौरान होने वाली पीड़ा, परेशानी, गर्भ का बार बार गिरना, कुँख बन्धन आदि का इलाज भी इसी पुस्तक में दिया गया हैं | इस पुस्तक में दिए गये मन्त्र व प्रयोग कई बार आजमाएं हुए है व हमेशा इन्होने अपना प्रभाव दिखाया हैं

भाषा: हिंदी मूल्य: 246 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-3 भुत-प्रेत, जादू-टोना निवारण शान्ति प्रयोग

इस भाग में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके द्वारा आप अपने या अपने परिवार के लोगो व अन्य बन्धुओ की सहायता कर सकते है जो की भूत, प्रेत, जादू, टोना, तंत्र, मन्त्र किये कराये, बुरी नजर दोष, गृह क्लेश आदि से पीड़ित हैं उनका समाधान करने में सक्षम होंगे | तथा होने वाली सभी समस्याओ से रक्षा, बचाव भी कर सकते हैं | इस पुस्तक में शरीर रक्षा, गृह रक्षा, भूत, प्रेत, जादू, टोना, तंत्र, मन्त्र किये कराये, बुरी नजर दोष आदि से रक्षा के मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं | और साथ ही इस भाग में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके द्वारा आप अपने या अपने परिवार के लोगो व अन्य बन्धुओ की सहायता कर सकते है जो की रोजगार काम नही मिलता ? क़र्ज़ में डूबे जा रहे हो ? काम करने का मन नही करता ? सोभाग्य सोया हुआ है ? दुर्भाग्य जागा हुआ है ?
लक्ष्मी रूठी है ? अलक्ष्मी / कर्ज का घर में निवास हो रहा है ?
क्या आप हमेशा परेशानियों से घिरे रहते है ?
क्या आपके घर में हमेशा लड़ाई झगड़ें का माहोल बना रहता है ?
क्या आप को जीवन में तरक्की की राह नही मिल रही ?
पढाई में मन नही लगता ?
क्या आप कोर्ट मुक़दमें आदि में फंसे हुए हो या किसी ने जानबूझकर या आपको और आपके परिवार को परेशान करने हेतु फंसा दिया है ? फैसला अपने अनुकूल करना करना चाहते हो ?

भाषा: हिंदी मूल्य: 286 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-4 स्तम्भन, उच्चाटन, जऋम्भन, विद्वेषण प्रयोग

इस भाग में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके द्वारा आप अपने शत्रुओं का स्तम्भन यानि रोक देना अर्थात बंधन करना, उच्चाटन यानि मन में अशांति फैलाना, जऋम्भन जिससे की आपके शत्रु आप से डरने लगे, विद्वेषण प्रयोग के द्वारा आप किसी के भी बीच विवाद आदि उत्पन्न कर सकते हैं | इस पुस्तक में दिए गये मन्त्र व प्रयोग कई बार आजमाएं हुए है व हमेशा इन्होने अपना प्रभाव दिखाया हैं |

भाषा: हिंदी मूल्य: 296 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-5 वशीकरण मन्त्र

इस भाग में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके द्वारा आप किसी स्त्री, पुरुष, अधिकारी आदि को अपने वश या अनुकूल कर सकते हैं | इसी पुस्तक के द्वारा आप निम्न समस्याओं का भी समाधान कर सकते हैं | इस पुस्तक में दिए गये मन्त्र व प्रयोग कई बार आजमाएं हुए है व हमेशा इन्होने अपना प्रभाव दिखाया हैं |

किसी का वशीकरण करना है ? उसे अपने अनुकूल करना है ?

अपना खोया प्यार Ex-boyfriend / Ex-girl friend वापस पाना चाहते हो ?

अपनी पत्नी या पति अथवा प्रेमी या प्रेमिका को अपने अनुकूल करना चाहते हो ? या उनके माता पिता को शादी के लिए राज़ी / मनाना चाहते हो ?

क्या आपका पति या पत्नी आपको प्यार नही करती/करता ? या आपका कहना ना मानता हो या किसी और दुसरे के साथ वो ज्यादा लगाव रखता / रखती है ?

सौतन से छुटकारा पाना है ? या आपका लड़का / लड़की किसी के प्यार में फस गया है, उसे निकालना है या उनके रिश्ते तो तोड़ना है ?

क्या आप किसी अधिकारी को अपने अनुकूल करके अपने उचित कार्यो का समाधान चाहते है ?

क्या आप अपने मालिक, अधिकारी, साझेदार को अपने अनुकूल बना कर उनकी कृपा दृष्टि चाहते है ?

क्या आपके अधीन आपके नौकर, कर्मचारी आदि को आप अपने वश में करके अनसे उचित कार्य चाहते है ?

भाषा: हिंदी मूल्य: 451 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-6 भगत की भगताई

शरीर में देवी, देवता, पितृ आदि आना

प्रिय भगतों आज पहली बार आप किसी ऐसी पुस्तक के बारे में जानने जा रहे हैं जिसके विषय को आज तक ना तो किसी ने कभी आपको बताया होगा और ना ही आपने कभी कोई ऐसी छपी हुई पुस्तक देखि होगी | हालाँकि ये कोई नया विषय या विधि नही है परन्तु ठोस सबूत और लयबद्ध विधि के अभाव में सभी को इसकी पूरी जानकारी नहीं होती | "भगत की भगताई" यह पुस्तक ख़ास उन भगतों के लिए है जिन पर किसी देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी आती है और ऐसे लोगो को "भगत", "घुडला / घोडला" आदि के नामो से जाना जाता है | मेरे खुद के अनुभव और कई महान भगतो से जो मैने सिखा की किस तरह ये शक्ति और भगत काम करते है और किस प्रकार की विधि अपनाई जाती है जिससे की सबकुछ बिलकुल ठीक चलता रहे और अपने कर्म के रास्ते में विचलित ना हो पाए |

और ये सब कैसे सम्भव है?, आपको करना क्या है?, क्या है वो चीज़ जो आप में आकर दुसरो का भला करती है?

और आने वाली मुसीबत से पहले से आपको अवगत करा देती है |, किसी ने आपके देवी-देवता की सवारी बाँध दी हो, या व्यवधान उत्पन्न कर दिया है?, किसी प्रकार स्वयम का या अन्य भगतो की रक्षा की जाए?

देवी-देवता के वचन पुरे नही हो रहे, क्यों? क्या कारण है?, गुरु ने या किसी अन्य भगत ने आपकी शक्ति, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी को बांध दिया है?, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी आपके कार्य नही कर रहे है?, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी सही बात नही बताते?, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी आपको गुमराह करते है या वचन दिया हुआ पूरा कार्य नही करते है?, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी रूठी हुई हो?, देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी, आप में या आपके किसी प्रियजन में देवी देवता पितर बाबा आदि की छांया, आवेश, बुझा, जागर या सवारी आना बंद हो गया है?, घर में देवी देवता पितृ आदि के आने के बाद भी परेशानियाँ घेरे हुए है?

घर में देवी देवता पितृ आदि के आने के बाद भी आपके घर में कलह होता है?, घर में देवी देवता पितृ आदि के आने के बाद भी आपके कार्य रुके हुए है? जैसे शादी-विवाह, सन्तान प्राप्ति, जगार इत्यादि?, वो सब मैंने इस पुस्तक में लिख दिया | जिससे की आप खुद अपनी या अन्य किसी भगत की सहायता कर सकने में सक्षम होंगे| व् उनके सभी शंकाओ का समाधान करके उन्हें सभी बाधाओ, परेशानियों, रूकावटो आदि से मुक्त करवाओगे|

भगतो आज आप इस EBOOK से बहुत कुछ सिखने वाले है| आशा करता हूँ कि आप इस पुस्तक का पूरा पूरा लाभ उठा पायेंगे | “भगत की भगताई” इस पुस्तक का नाम इसी लिए रखा है ताकि वे लोग जिन पर किसी देवी देवता पितर या बाबा आदि की सवारी आती है और वे अपने स्वयं के काम में असफल होते है|

जो भगत लोग परेशान है, उन पर किसी देवी देवता या घर के पितर देव की सवारी आती है और ऐसे भगत लोग सब का गारंटी से और समय पर काम करते है परन्तु जब स्वयं की या स्वघर की बात आती है तो ऐसा लगता है मानो देवता कुछ कर ही नही रहा फिर अपने देवता से मन का हटना, चिडचिडापन आना, इर्ष्या होना आम बात है|

विषय को अच्छी तरह से समझने के लिए इस लेख से निचे विडियो दी गयी है, अभी तक 7 भाग बन चुके है| आप Youtube चैनल पर भी देख सकते है |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 551 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग 7- धन योग

आज के इस भौतिकवादी युग में धन के अभाव में इन्सान की कोई कीमत नही रही | अगर किसी के पास धन है तो उसको मान-सम्मान हर स्थान पर प्राप्त होता है और वहीँ दूसरी और अगर आपके पास धन का अभाव है तो आपकी कोई भी मान-सम्मान नही करेगा | धन आजके इस भौतिकवादी संसार में निर्वाह करने का मुख्य अंग है जिसको नकारा नही जा सकता | माँ लक्ष्मी को खुश करने से वह अपने भक्तो पर सदैव अपने आशीर्वाद की वर्षा करती रहती है जिससे की जीवन में सरलता और समृधि का प्रवाह निरंतर स्थापित रहता है |
हर मनुष्य की चाहत होती है अपार धन/रूपए-पैसे की प्राप्ति, लेकिन यह धन/रूपए-पैसे आपको सिर्फ चाहने भर से नहीं मिलता है| इसके लिए आपको दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है और सफलता प्राप्ति ही होने पर आपको इसके लिए आपको मां लक्ष्मी को प्रसन्न करना वहुत जरूरी है| चाहे आप आध्यात्मिक तरीके से माँ लक्ष्मी-कुबेर को प्रसन्न करे या तन्त्र क्रिया के द्वारा | धन/रूपए-पैसे जीवन की सबसे आधारभूत आवश्यकता है, जिसके बिना कोई भी अपने दैनिक जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता | हम धन/रूपए-पैसे के महत्व की तुलना कभी भी प्यार और देखभाल के महत्व से नहीं कर सकते हैं | जब किसी को धन/रूपए-पैसे की आवश्यकता होती है, तो उसे प्यार से पूरा नहीं किया जा सकता और यदि किसी को प्यार की आवश्यकता होती है, तो उसे धन/रूपए-पैसे से पूरा नहीं किया जा सकता | दोनों की ही स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य तथा अपिहार्य आवश्यकता है लेकिन, दोनों का जीवन में अलग-अलग महत्व भी है | हमें दोनों की ही तत्काल आवश्यकता है, इसलिए हम दोनों को समान पैमाने पर नहीं माप सकते हैं | हमें धन/रूपए-पैसे की सब जगह आवश्यकता होती है, जैसे- खाना खाने के लिए, पानी या दूध पीने के लिए, टीवी देखने के लिए, अखबार खरीदने के लिए, कपड़ें पहनने के लिए, स्कूल में प्रवेश लेने के लिए, शिक्षा प्राप्त करने के लिए, और अन्य बहुत सी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आदि| धन/रूपए-पैसे का महत्व दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है, क्योंकि हमारा रहन-सहन बहुत महँगा हो गया है | धन/रूपए-पैसे के महत्व में उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण, सार्वजनिक राजस्व आदि के क्षेत्र में बड़े स्तर पर वृद्धि हुई है | यह आय, रोजगार, आगम-निगम, सामान्य मूल्य स्तर आदि के निर्धारण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | यदि वर्तमान समय को देखा जाए तो इस बात में कोई संदेह नहीं है कि, जिसके पास धन/रूपए-पैसे की अधिकता है, वो ही संसार में अधिक सभ्य माना जाता है | अतः जीवन के हर एक पक्ष में धन/रूपए-पैसे ने अपने महत्व को प्रदर्शित कर दिया है|
भाषा: हिंदी   मूल्य: 366 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-9 घर परिवार सम्बन्धित उपाय

आज का युग बहुत ही कठोर संघर्ष का है, किसी व्यक्ति को घर में संघर्ष करना पड़ता है तो किसी को समाज के सामने संघर्ष करना पड़ता है | इस भाग में घर परिवार से सम्बन्धित समस्याओ का हल दिया गया है जिनको अपनाने पर आपके घर का माहौल बहुत ही मधुर और प्रसन्न रहेगा और संघर्ष करने वालो की भी जीत होगी | इस भाग में उन समस्त उपायों, मन्त्रो, साधनाओं. टोटको का वर्णन किया गया है जिनके द्वारा आप अपने परिवार में उत्पन्न समस्याओ से निजात पा सकते है | और घर-परिवार का माहौल सुधार सकते है कारण चाहे कोई भी हो |
शाबर मन्त्र भाग 9 में घर परिवार से सम्बन्धित उन समस्त मुख्य उपायों, विधियों, तंत्रों, मन्त्रो और टोटको को शामिल किया गया है जिनसे बहुत सि समस्याओ का निदान सम्भव है जैसे विवाह योग्य पुत्र या पुत्री की शादी-विवाह की रुकावट जिसके कारण परिवार वालो को समाज के सामने नीचा देखना पड़ता है | घर-परिवार में अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहते हो जिसके कारण से आपको आस-पडौस में भी सिर झुकाकर चलना पड़ता है | कहीं कौर्ट कचहरी के चक्कर लगा लगाकर समय और धन की बर्बादी कर रहे हो | घर-परिवार के सदस्य बैकार बैठे हो घर में और उन्हें काम-रोज़गार नही मिलता हो अगर मिल भी जाए तो जल्दी ही छुट जाता है| घर-परिवार के सदस्यों का व्यवसाय सही नही चलता हो या किसी ने मन्त्र-तन्त्र क्रिया करके व्यापार/रोज़गार का बंधन लगा दिया हो | घर-परिवार पर किसी ने तन्त्र किया हो, घर के लोग परेशानीयों में घिरे हो, मान-सम्मान की कमी हो गयी हो | और भी अन्य कई परेशानियों का हल इस पुस्तक में दर्शाया गया है |

भाषा: हिंदी   मूल्य:366 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-10 श्री हनुमान साधना

श्री राम के परम भक्त हनुमान जी महाराज आठ चिरंजीवियों में से एक है ,जो अनंत काल से अपने भक्तों के आस पास ही रहते हैं और उनसे खुश होकर उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं| हनुमान जी जल्द ही प्रसन्न होने वाले देवताओं में से एक हैं और इसके लिए कुछ चमत्कारी मंत्र यहांं बताए जा रहे हैं| इन मंत्रों की सही विधि जानकर इनका जाप करें जिससे प्रसन्न होकर आप पर कृपा बरसाएं|

अगर हनुमान जी आपसे खुश होते हैं तो ऐसा कोई काम नहीं जो आप ना कर सको और आपके शत्रु भी आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। शारीरिक रोग हो या मानसिक रोग देहिक रोग देवीक रोग या भौतिक रोग अथवा भूत प्रेत तंत्र मंत्र की परेशानी सभी बाधाओं से मुक्त करा सकते हैं श्री बालाजी महाराज व अपने भक्तों का सदेव कल्याण करते हैं । आज के इस युग मे श्री हनुमानजी संकट मोचन के रूप में जाने जाते हैं तथा उनकी थोड़ी सी भक्ति साधना करने पर ही वह बहुत जल्द प्रसन्न हो जाते हैं और अपने भक्तों का उद्धार करते हैं। इस शाबर मंत्र भाग 10 में श्री हनुमानजी संबंधित अनेक प्रचलित प्राचीन उपासनाएं हनुमान जी के सिद्ध शक्तिशाली शाबर मंत्र, हनुमान जी की मंत्र साधनाएं व हनुमान जी संबंधित टोने टोटके उपाय बताए गए है ।आज के समय में ऐसा कोई कार्य नहीं जिसको की श्री हनुमान जी ना कर सके। हनुमान प्रभु की साधना करना अत्यंत ही सुगम और सरल है | हां, इस बात का ध्यान अवश्य रखें साधक कि हनुमान जी को बाल ब्रह्मचारी माना जाता है | अत: इनकी साधना के समय ब्रह्मचर्य व्रत का पालन अवश्य करना चाहिए | किसी भी प्रकार की समस्या हो या कोई भी परेशानी हो तो हनुमान जी के शरणागत होने से सभी समस्याओं का समाधान अपने आप ही हो जाता है | हनुमान जी की उपासना को अगर भक्ति भाव, श्रद्धा, सात्विकता और समर्पण की भावना से किया जाए तो साधक बजरंगबली का कृपापात्र बन जाता है | आज हम अपने पाठकों के लिए “श्री हनुमान साधना ”के कुछ मंत्र व उपाय लेकर आए हैं ,जिन्हें अपनाने से साधक नि:सन्देह हनुमानजी की कृपा का पात्र बनेगा |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 366 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-11 विवाह उपाय

शाबर मन्त्र भाग-11 में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो व् टोटको को सम्मिलित किया गया है जो की ग्रामीण परिवेश में अक्सर प्रयोग में लाये जाते है जिनके द्वारा आप विवाह योग्य लडके या लड़की जिनकी विवाह के लिए उम्र

कुछ ज्यादा ही हो गयी हो उनके विवाह सम्बन्धित बाधाओं को नष्ट करके उनके लिए वर या वधु निश्चित कर सकते है | विवाह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक परम्परा है | हर व्यक्ति चाहे वो लड़का हो या लडकी, सभी एक परिपूर्ण जोड़ा या वर/वधु चाहते है। व्यवस्थित और प्रेम विवाह का विचार एक सिक्के के दो पहलू हैं। ऐसा माना जाता है कि व्यवस्थाबद्ध विवाह, जो कि भारतीय समाज में परंपरागत रूप से चलता है और आधुनिक युग में भी स्वीकार किया जाता है, जबकि प्रेम विवाह ऐसी चीज है जो पश्चिम के लोगों में शामिल है। यह, हालांकि, एक काल्पनिक बात है। आज की दुनिया की बदलती गतिशीलता के कारण - हम दोनों ही को अपने चारों ओर प्रचलित देखते हैं। लेकिन यह एक व्यक्ति पर निर्भर है कि उनके लिए सबसे अच्छा क्या है। इस पुस्तक में विवाह के लिए मन्त्र तन्त्र यंत्र व् टोटको का विवरण दिया गया है जो की कई बार आजमाएं गये है और उनका परिणाम भी मनोवांछित आता है | जिनके शादी के लायक पुत्र या पुत्री हो जाए और उन्हें मनोवांछित वधु या वर की प्राप्ति नही हो रही हो, विवाह की बातचीत बिच में ही रुक जाए, बार बार देक्खने पर भी विवाह का रास्ता नही बन पा रहा हो, विवाह में बाधा आ रही हो, चाहे बाधा का कारण पितृ शाप हो या ग्रहों का बुरा प्रभाव हो अथवा किसी ने विवाह का बंधन करा दिया हो, पति -पत्नी में अनबन रहती हो, दाम्पत्य जीवन निराशा में हो, प्रेम का आभाव हो, पति-पत्नी में बनती नही हो उन सबके लिए यह पुस्तक लाभदायक सिद्ध होगी |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 351/-

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-12 सन्तान योग

शाबर मन्त्र भाग-12 में शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो व् टोटको को सम्मिलित किया गया है जो की ग्रामीण परिवेश में अक्सर प्रयोग में लाये जाते है जिनके द्वारा सन्तान की इच्छा रखने वाले युवक व् युवतिया, महिला व् पुरुष, अथवा पति-पत्नी, नि:सन्तान दम्पति अपने जीवन को बिना पापा-मम्मी सुने व्यर्थ समझते है, उनके घर भी इश्वर की असीम अनुकम्पा से बच्चो की किलकारी सुनाई पड़ती है | शादी केवल दो शरीरो का मिलन ही नहीं बल्कि दो आत्माओ का मिलान होता है | शादी से दो परिवार आपस में एक दुसरे से जुड़ते है और शादी के बाद फिर एक नयी आत्मा/जीव को इस धरती पर एक नया जन्म मिलता है आपकी संतान के रूप में आपके और आपके हमसफर के सहयोग से, परन्तु यह एक बहुत ही बड़ा दुर्भाग्य है की शादी के बाद अगर संतान न हो | तो यह नि:सन्तानता अपके लिए एक सबसे बड़ी अकाट्य परेशानी का कारण बन जाती है क्योकि हमारा यह महान समाज उस औरत को जीने नहीं देता, उसे ताने मारता है "बाँझ" का नाम उसे दिया जाता है | परिवार में मदभेद होने लगते है और कई बार बात तलाक तक पहुच जाती है |

संतानहीनता अर्थात् जब आप बच्चे को जन्म देने में असमर्थ हों | अधिकांश पुरुष और महिलाएं यह मानते हैं कि वे बच्चे को जन्म दे सकेंगे | लेकिन सच्चाई यह है कि हर दस में से एक दंपति को गर्भधारण में कठिनाई होती है | कुछ महिलाएं तथा पुरुष बच्चा नहीं चाहते हैं | लेकिंन जो दंपति बच्चे की आशा करते हैं, उनके लिए संतानहीनता दुख, दर्द , क्रोध तथा निराशा का कारण बन जाती है |

प्राय: ही संतानहीनता का दोष महिला के सिर पर थोंप दिया जाता है परंतु लगभग आधे मामलों में इसके लिए पुरुष लोग भी जिम्मेवार होते है | कभी-कभी पुरुष इस बात पर विश्वास नहीं करता है कि यह समस्या केवल उसके ही कारण हैं, या इसके लिए दोनों जिम्मेवार हैं | वह ग़लत फ़हमी या अज्ञानता के कारण ऐसा सोच सकता है कि क्योंकि वह मैथुन क्रिया करने में सक्षम हैं, इसलिए संतानहीनता के लिए वह जिम्मेवार नहीं हो सकता | इस कारण वह अपनी जांच करने से मना कर सकता है तथा उसे इस बात पर क्रोध भी आ सकता है जब पुरुष को उसकी सन्तान उत्पत्ति सामर्थ्यता का परीक्षण करवाने को कहा जाए | अधिकतर यह इसलिए होता है, क्योंकि समाज में संतानहीनता को शर्म की निगाह से देखा जाता है और पुरुष के लिए बच्चे पैदा करना मर्दानगी की निशानी समझी जाती है |

अत: आप लोगो की भलाई के लिए इस eBook में उन सभी मन्त्र, तन्त्र, यंत्र, टोटको आदि का वर्णन किया गया है जो की किसी सन्तान की इच्छा रखने वाले दम्पति की इच्छा पूरी कर सके |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 351/-

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-13 तन्त्र सामग्री और उनके प्रयोग

अभी तक आपने इन्टरनेट की दुनिया से तन्त्र के क्षेत्र में जो भी कुछ जाना है कि किन-किन वस्तुओं का तन्त्र में प्रयोग किया जाता है, तो यह मेरा दावा है की आप इन्टरनेट पर उन सभी सामग्रियों की जानकारी प्राप्त नही कर सकते जिनको इस छोटी सी ebook के माध्यम से दर्शाया जा रहा है | और अक्सर बड़े-बड़े भगत लोग उन समाग्रियो के विषय, प्रयोग, नाम, मन्त्र आदि को छुपा कर रखते है और केवल घरेलू परम्परा में ही केवल अपने खास भगत या रिश्तेदार को ही बताते है जैसे की तन्त्र में प्रयुक्त होने वाले 52 दाने | इन दानों को कैसे प्रयुक्त किया जाता है और इनके साथ किस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है ये बाते आपको हर कोई नही बताता और मै तो यहाँ तक कहूँगा की इनका प्रयोग एक गुरु अपने खास शिष्य को भी नही बताता है | आप इसी ebook में बहुदा प्रयोग की जाने वाली तंत्र सामग्रियों के विषय में जानेंगे जैसे तंत्र दानो के प्रयोग (जैसे भुत दाना, प्रेत दाना, बेताल दाना, वीर दाना, जींद दाना, पलित दाना, मसान दाना, खबीस दाना, देवी दाना, देवता दाना, पितृ दाना, और भी ऐसे 52 दानों के विषय में वर्णन और प्रयोग बताये गये है |) काली हल्दी, इन्द्रजाल, कपूर, आक का पौधा, नागकेसर, बिल्ली, दूर्वा, अश्व (वाहन) नाल, गोमती चक्र, गोरखमुंडी तंत्र:, हत्थाजोड़ी, इन्द्रजाल तंत्र, वनस्पति के तान्त्रिकीय टोटके, मोरपंख, गोरोचन, सियार सिंगी, आपामार्ग और भी एनी काई तांत्रिक सामग्रियों का सविस्तार वर्णन किया गया है और उनको किस तरह से प्रयोग किया जाता है और किन मन्त्रो के द्वारा इनको चलाया जाता है आदि अनेक बातो का विवरण इस ebook में बताया गया है |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 351/-

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-14 महाकाली सिद्धि

शाबर मन्त्र भाग 14 "महाकाली सिद्धि" में महाकाली माँ की सिद्धि के शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रोक्त मन्त्र तंत्रों व यंत्रो का संकलन किया गया हैं जिनके नियम से साधना करने से माँ काली की कृपा प्राप्त करना सम्भव है |
इस ebook में दिए गये मन्त्रो, विधानों का कोई भी साधारण इंसान. भगत, साधक सभी कर सकते है | यदि गुरु नही बनाया गया है तो आप शाबर मन्त्र भाग 1 को पढ़िए, उसे पढने के बाद उस पर अच्छे से चिन्तन करिये फिर फिर आप स्वयम में ही साधना करने को तैयार हो जायेंगे, आपके सभी प्रश्नों का हल मिल जायेगा और फिर आप किसी भी मन्त्र साधना को बड़े ही आसानी से सम्पन्न कर पाएंगे |

यह ईबुक माँ काली की विशेष कृपा, सिद्धि प्राप्त करने के लिए एक साधन है जिससे की आप स्वयं का और अन्य लोगू के दुःख-दर्द दूर करने के काबिल बनोंगे और जो महाकाली माँ का भगत है या माँ महाकाली जिनकी इष्ट है उनके लिए तो यह ebook महाकाली का आशीर्वाद स्वरूप है |

महाकाली सचमुच के रूप में अनुवाद महान काली , है हिन्दू देवी के समय और मौत , की पत्नी माना महाकाल , चेतना के देवता, के आधार वास्तविकता और अस्तित्व। संस्कृत में महाकाली हिंदू धर्म में भगवान शिव का एक प्रतीक है, जो महाकाला या महान समय (जिसे मृत्यु के रूप में भी समझा जाता है) का व्युत्पन्न रूप है। महाकाली आदि पराशक्ति का रूप है , जो समय और स्थान से परे है।काली आदि पैरशक्ति के क्रोध का बल है और इसलिए उसका रंग काला है। वह काली का सबसे बड़ा पहलू है, जिसे कई हिंदू दिव्य माता के रूप में रखते हैं।

महाकाली का इतिहास विभिन्न पुराणिक और तांत्रिक हिंदू शास्त्रों (शास्त्र) में निहित है । इन में वह नाना प्रकार से के रूप में चित्रित किया गया है आदि-शक्ति - देवी दुर्गा , ब्रह्मांड के आदिम सेना, परम सत्य या के साथ समान ब्राह्मण । उन्हें (पुरुष) पुराकृति या विश्व के रूप में भी जाना जाता है (पुरुष) पुरुष या चेतना, या महादेवी दुर्गा (महान देवी) के तीन अभिव्यक्तियों में से एक के रूप में जो सांख्य दर्शन में तीन गुना या गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस व्याख्या में महाकाली तामस का प्रतिनिधित्व करती हैया जड़ता की शक्ति। देवी महात्मा ("देवी की महानता") की एक आम समझ , मार्कंडेय पुराण में बाद में हस्तक्षेप , शक्तिवाद का एक मुख्य पाठ माना जाता है (हिंदू धर्म की शाखा जो देवी दुर्गा को भगवान के सर्वोच्च पहलू के रूप में मानती है) इसमें तीनों एपिसोड में से प्रत्येक के लिए देवी (महासरस्वती , महालक्ष्मी , और महाकाली) का एक अलग रूप है। यहां महाकाली को पहले एपिसोड में सौंपा गया है। उन्हें एक अमूर्त ऊर्जा, विष्णु के योगानिद्रा के रूप में वर्णित किया गया है । ब्रह्मा ने उसे बुलाया और वह विष्णु से निकल गई और वह जागृत हो गया। उसके बाद राक्षसों को मारता है |

काली नाम का मतलब कला या समय का बल है। जब न तो सृजन, न ही सूर्य, चंद्रमा, ग्रह और पृथ्वी थी, वहां केवल अंधेरा था और अंधकार से सब कुछ बनाया गया था। काली की अंधेरी उपस्थिति अंधेरे का प्रतिनिधित्व करती है जिससे सब कुछ पैदा हुआ था। उसका रंग गहरा नीला है, जैसे आकाश और समुद्र के पानी नीले रंग के रूप में। चूंकि वह संरक्षण की देवी भी है, काली को प्रकृति के संरक्षक के रूप में पूजा की जाती है । काली शिव पर शांत खड़ा है , उसकी उपस्थिति मां प्रकृति के संरक्षण का प्रतिनिधित्व करती है। उसके मुक्त, लंबे और काले बाल सभ्यता से प्रकृति की आजादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। काली की तीसरी आंखों के नीचे, सूर्य, चंद्रमा और आग दोनों के संकेत दिखाई दे रहे हैं जो प्रकृति की चालक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । काली हमेशा अंधेरे देवी के रूप में नहीं सोचा जाता है। काली की उत्पत्ति युद्ध के बावजूद, वह अपनी रचनात्मक, पोषण और भस्म करने वाले पहलुओं में मां प्रकृति के पूर्ण प्रतीक के रूप में विकसित हुई। हिंदू तांत्रिक परंपरा में उन्हें एक महान और प्रेमपूर्ण प्रामाणिक मां देवी के रूप में जाना जाता है। इस पहलू में, मां देवी के रूप में, उन्हें काली मां के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ काली मां है, और लाखों हिंदू इस तरह के सम्मान में हैं।

इस ebook को बनाने में बहुत ही ज्यादा समय लगा है और इसमें ऐसे प्रयोग, मन्त्र, तन्त्र आदि दर्शाए गये है जिनका प्रयोग कई बार किया जा चूका है तथा जो दुखी अपनी समस्याओ के समाधान के लिए हमे ईमेल या कमेंट करते है उन्हें भी हम इसी ebook से साधना बताते है जिसका की परिणाम भी उचित आता है |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 251/-

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-15 श्री कामाक्षा देवी मन्त्र तन्त्र साधना

योनि मात्र शरीराय कुंजवासिनि कामदा।
रजोस्वला महातेजा कामाक्षी ध्येताम सदा॥

अम्बूवाची योग पर्व के दौरान मां भगवती के गर्भगृह के कपाट स्वत ही बंद हो जाते हैं और उनका दर्शन भी निषेध हो जाता है। इस पर्व की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पूरे विश्व से इस पर्व में तंत्र-मंत्र-यंत्र साधना हेतु सभी प्रकार की सिद्धियाँ एवं मंत्रों के पुरश्चरण हेतु उच्च कोटियों के तांत्रिकों-मांत्रिकों, अघोरियों का बड़ा जमघट लगा रहता है। तीन दिनों के उपरांत मां भगवती की रजस्वला समाप्ति पर उनकी विशेष पूजा एवं साधना की जाती है।

पौराणिक सत्य है कि अम्बूवाची पर्व के दौरान माँ भगवती रजस्वला होती हैं और मां भगवती की गर्भ गृह स्थित महामुद्रा (योनि-तीर्थ) से निरंतर तीन दिनों तक जल-प्रवाह के स्थान से रक्त प्रवाहित होता है। यह अपने आप में, इस कलिकाल में एक अद्‍भुत आश्चर्य का विलक्षण नजारा है।
कामाख्या मंदिर असम की राजधानी दिसपुर के पास गुवाहाटी से 8 किलोमीटर दूर कामाख्या में है। कामाख्या से भी 10 किलोमीटर दूर नीलाचल पर्वत पर स्थित है। यह मंदिर शक्ति की देवी सती का मंदिर है। यह मंदिर एक पहाड़ी पर बना है व इसका महत् तांत्रिक महत्व है। प्राचीन काल से सतयुगीन तीर्थ कामाख्या वर्तमान में तंत्र सिद्धि का सर्वोच्च स्थल है। पूर्वोत्तर के मुख्य द्वार कहे जाने वाले असम राज्य की राजधानी दिसपुर से 6 किलोमीटर की दूरी पर

स्थित नीलांचल अथवा नीलशैल पर्वतमालाओं पर स्थित मां भगवती कामाख्या का सिद्ध शक्तिपीठ सती के इक्यावन शक्तिपीठों में सर्वोच्च स्थान रखता है। यहीं भगवती की महामुद्रा (योनि-कुण्ड) स्थित है।
अम्बुवाची पर्व विश्व के सभी तांत्रिकों, मांत्रिकों एवं सिद्ध-पुरुषों के लिये वर्ष में एक बार पड़ने वाला अम्बूवाची योग पर्व वस्तुत एक वरदान है। यह अम्बूवाची पर्वत भगवती (सती) का रजस्वला पर्व होता है। पौराणिक शास्त्रों के अनुसार सतयुग में यह पर्व 16 वर्ष में एक बार, द्वापर में 12 वर्ष में एक बार, त्रेता युग में 7 वर्ष में एक बार तथा कलिकाल में प्रत्येक वर्ष जून माह में तिथि के अनुसार मनाया जाता है। इस बार अम्बूवाची योग पर्व जून की 22, 23, 24 तिथियों में मनाया गया।
कामाख्या-मन्त्र का महत्त्व 'कामाख्या तन्त्र' के अनुसार 'सिद्धि की हानि' एवं 'विघ्न-निवारण' हेतु 'कामाख्या-मन्त्र' का जप आवश्यक है। सभी साधकों को सभी देवताओं के उपासकों को 'कामाख्या-मन्त्र की साधना' अवश्य करनी चाहिए। शक्ति के उपासकों के लिए 'कामाख्या-मन्त्र' की साधना अत्यन्त आवश्यक है। यह 'कामाख्या-मन्त्र' कल्प-वृक्ष के समान है। सभी साधकों को एक, दो या चार बार इसका साधना एक वर्ष मे अवश्य करना चाहिए।**भाषा: हिंदी   मूल्य: 201 / -**

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-16 श्री बगुलामुखी देवी मन्त्र तन्त्र साधना

देवी बगलामुखी दस महाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं यह माँ बगलामुखी स्तंभन शक्ति की अधिष्ठात्री हैं| इन्हीं में संपूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्ति का समावेश है| माता बगलामुखी की उपासना से शत्रुनाश, वाकसिद्धि, वाद विवाद में विजय प्राप्त होती है| इनकी उपासना से शत्रुओं का नाश होता है तथा भक्त का जीवन हर प्रकार की बाधा से मुक्त हो जाता है| बगला शब्द संस्कृत भाषा के वल्गा का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है दुलहन है अत: मां के अलौकिक सौंदर्य और स्तंभन शक्ति के कारण ही इन्हें यह नाम प्राप्त है|

देवी बगलामुखी भक्तों के भय को दूर करके शत्रुओं और बुरी शक्तियों का नाश करती हैं| माँ बगलामुखी का एक नाम पीताम्बरा भी है इन्हें पीला रंग अति प्रिय है इसलिए इनके पूजन में पीले रंग की सामग्री का उपयोग सबसे ज्यादा होता है| देवी बगलामुखी का रंग स्वर्ण के समान पीला होता है अत: साधक को माता बगलामुखी की आराधना करते समय पीले वस्त्र ही धारण करना चाहिए|

बगलामुखी देवी रत्नजडित सिहासन पर विराजती होती हैं रत्नमय रथ पर आरूढ़ हो शत्रुओं का नाश करती हैं| देवी के भक्त को तीनो लोकों में कोई नहीं हरा पाता, वह जीवन के हर क्षेत्र में सफलता पाता है पीले फूल और नारियल चढाने से देवी प्रसन्न होतीं हैं| देवी को पीली हल्दी के ढेर पर दीप-दान करें, देवी की मूर्ति पर पीला वस्त्र चढाने से बड़ी से बड़ी बाधा भी नष्ट होती है, बगलामुखी देवी के मन्त्रों से दुखों का नाश होता है| इस ईबुक में माँ बगुलामुखी से सम्बन्धित ढेर सारे शाबर मन्त्र तन्त्र आदि दिए गये है और भविष्य में और भी मन्त्र आदि इसमें जोड़े जायेंगे |

भाषा: हिंदी   मूल्य: 201 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग-17 श्री शिव व् कालभैरव मन्त्र तन्त्र साधना

इंसान, जिसने भी जन्म लिया है, उसका जीवन तमाम तरह की विघ्न-बाधाओं से भरा रहता है। कुछ आपत्तियां तो कुछ विपत्तियों का सामना करते हुए गुजरती जिंदगी में कई मौके ऐसे भी आते हैं जब मुश्किलों का हल आसानी से नहीं निकल पाता है। खासकर तब जब शत्रु के द्वारा पैदा की गई समस्याएं आफत बनकर सामने आ जाती हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए किए जाने वाले उपायों में तंत्र साधना को काफी उपुक्त बताया गया है। इसका जीवन में विशिष्ट महत्व है और ये दिनचर्या को सहज-सरल बनाने में काफी मददगार साबित होते हैं। भैरव तंत्र साधना से संभव है, जिसमें भगवान शिव की अद्भुत और विपुल शक्ति को जागृत किया जाता है।

हिंदू शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव सर्वव्यापि हैं और संसार सत्व, रज और तम गुणों से मिलकर बनी हुई है। इनपर शिव का नियंत्रण रहता है। शिव में अगर आनंद और उग्रता का रूप है, तो वे सात्विक गुण से भी परिपूर्ण माने गए हैं। इन तीनों गुणों की अपार शक्ति उनके भैरव अवतार में होती है। इस बारे चली आ रही मान्यता के अनुसार भगवान

शिव प्रदोषकाल में काल और कलह रूपी अंधकार से संसार की रक्षा के लिए भैरव रूप में प्रकट हुए थे। शिव महापुराण में बताया गया है-

"भैरवः पूर्णरूपो हृशंकरः परात्मनः,
मूढ़ास्ते वै न जानन्ति मोहिता शिवमायया।"

इसे ही रुद्रावतार कहा गया है। रुद्रायमल तंत्र में कुल 64 भैरवों की चर्चा की गई है, लेकिन तंत्र साधन में भैरव के दस रूप ही ज्यादा उल्लेखित किए हैं और कहा गया है कि कोई भी महाविद्या तभी सिद्ध हो सकती है, यदि भैरव के दस रूपों से संबंधित भैरव की सिद्धि नहीं कर ली जाए। हालंकि रूद्र भैरव के रूपो में 1. असितांग भैरव, 2. चण्ड भैरव, 3. रु-रु भैरव, 4. क्रोधोन्मत्त भैरव, 5. भयंकर भैरव, 6. कपाली भैरव, 7. भीषण भैरव और 8. संहार भैरव सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। अदि शंकराचार्य ने भी अपनी पुस्तक प्रपंश्च-सार तंत्र में भी इन्हीं आठ भैरवों की चर्चा विशेष तौर पर की है।

भाषा: हिंदी मूल्य: 201 / -

शाबर मन्त्र भाग 18 श्री गोरखनाथ मन्त्र तन्त्र साधना

पूरे नाथ सम्प्रदाय के गुरु कहे जाने वाले गुरु गोरखनाथ को 84 सिद्धियाँ प्राप्त थी | गुरु गोरखनाथ ने अनेक शाबर मन्त्रों की रचना की और नाथ पन्थो की सभा में बैठकर उन्होंने बहुत से शाबर मन्त्र आदि का उपदेश दिया| ऐसी - ऐसी गूढ़ तंत्र विद्याएँ जिनसे लोग पहले अवगत नहीं थे, गुरु गोरखनाथ द्वारा ये तंत्र विद्याएँ चलन में आई | गुरु गोरखनाथ, भगवान शिव के भक्त थे व नाथ पंथ में उन्हें शिवावतरी भी माना जाता है, ऐसा भी माना जाता है कि ये सभी मंत्र उन्हें भगवान शिव द्वारा ही उन्हें प्राप्त हुए थे |
नाथ संप्रदाय में किसी भी प्रकार का भेद-भाव आदि काल से नहीं रहा है। इस संप्रदाय को किसी भी जाति, वर्ण व किसी भी उम्र में अपनाया जा सकता है। सन्यासी का अर्थ काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि बुराईयों का त्याग कर समस्त संसार से मोह छोड़ कर शिव भक्ति में समाधी लगाकर लीन होना बताया जाता है। जब भी कभी किसी साधना का नाम आता है तो अचानक ही एक नाम मन में आने लगता है "गुरु गोरख नाथ" | गुरु गोरखनाथ एक ऐसे तपस्वी हुए है जिनका सम्पूर्ण जीवन साधना व सिद्धियाँ प्राप्त करने में समर्पित हुआ | तथा उन्होंने अपने जीवन काल में वैदिक जैसे जटिल शाबर मन्त्रो को आमजन के लिए सुलभ बनाने हेतु बहुत से शाबर मन्त्रो की रचना की | सभी सिद्ध शाबर मंत्र गुरु गोरखनाथ की ही देन है | गुरु गोरखनाथ को गोरक्ष नाथ भी कहा गया है | गुरु गोरखनाथ के मन्त्रों द्वारा किसी भी प्रकार के रोग ,व्याधि और पीडाओं को दूर किया जा सकता है | गुरु गोरखनाथ के दिए मन्त्रों का विस्तार से वर्णन कर पाना कठिन है किन्तु हम आपको गुरु गोरखनाथ के कुछ शक्तिशाली शाबर मंत्रों की जानकारी अपनी इस शाबर मन्त्र भाग 18 श्री गोरखनाथ मन्त्र तन्त्र साधना ईबुक में देने का प्रयास करते है |

गुरु मत्स्येन्द्र नाथ के शिष्य गुरु गोरखनाथ अनेक सिद्धियों के मालिक थे | जो कि नाथ पंथ से गुरु मत्स्येन्द्र नाथ के बाद सबसे प्रभावशाली गुरु हुए है | गोरखपुर शहर का नाम गुरु गोरखनाथ के नाम पर ही है | गोरखपुर में गोरखनाथ जी का समाधि स्थल है जहाँ पूरे विश्वभर से नाथ सम्प्रदाय के लोग और गुरु गोरखनाथ के भक्त उनकी समाधि पर माथा टेकने आते है |

भाषा: हिंदी मूल्य: 201 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -19 शक्तिशाली शाबर मन्त्रो का संग्रह

इस भाग में आपको अनेक प्रकार के प्राचीन प्रमाणिक शक्तिशाली शाबर मंत्रो, तंत्रों व यंत्रो सम्बन्धी रहस्यों, बारीकियो का ज्ञान होगा और शाबर मन्त्रो की सिद्धि, प्रयोग, जप नियम, सीमायें आदि की पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी | और अगर आप एक शाबर मन्त्र साधक है या आपका ऐसा ही विचार है कि शाबर मन्त्र साधना करने का तो यह पुस्तक आपके लिए बहुत ही अनिवार्य है जिसका की अध्ययन आपको जरुर ही करना चाहिए | व् अपने शाबर मन्त्र साधक जीवन को अग्रसर करना चाहिए |

इस ईबुक के सभी मंत्र, यंत्र, यंत्र, कार्यवाही और उनके तरीकों को आज के चरम समय को देखकर हाइलाइट किया गया है, ताकि आम लोग जो भी कोई अन्य काम करते है वे भगत लोग, इस ग्रामीण ज्ञान का लाभ उठा सकते हैं। आपने आज तक कई किताबें पढ़ी हैं, जिसमें इस तरह के तरीकों का विवरण, जप और पूजा सामग्री , समय अवधि, दी जाती है कि आप केवल पढ़ने के बाद ही टूट जाते हैं और उन पुस्तकों में लिखी सभी बातो का पालन करना एक आम आदमी के लिए सम्भव भी नही होता , लेकिन इन पुस्तकों में सभी विधियां सरल हैं |

भाषा: हिंदी मूल्य: 251 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -20 अद्भुत शाबर मन्त्रो का संग्रह

इन मंत्रों के सभी मंत्र, यंत्र, यंत्र, कार्यवाही और उनके तरीकों को आज के चरम समय को देखकर हाइलाइट किया गया है, ताकि आम लोग जो भी कोई अन्य काम करते है वे भगत लोग , इस ग्रामीण शक्ति का लाभ उठा सकते हैं। आपने आज तक कई किताबें पढ़ी हैं, जिसमें इस तरह के तरीकों का विवरण, जप और पूजा सामग्री , समय अवधि, दी जाती है कि आप केवल पढ़ने के बाद ही टूट जाते हैं और उन पुस्तकों में लिखी सभी बातो का पालन करना एक आम आदमी के लिए सम्भव भी नही होता , लेकिन इन पुस्तकों में सभी विधियां सरल हैं | इस भाग “शाबर मन्त्र भाग 20 अद्भुत शाबर मन्त्र” में आपको अनेक प्रकार के प्राचीन प्रमाणिक अद्भुत शक्तिशाली शाबर मंत्रो, व् तंत्रों सम्बन्धी रहस्यों, बारीकियो का ज्ञान होगा और शाबर मन्त्रो की सिद्धि, प्रयोग, जप नियम, सीमायें आदि की पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी | और अगर आप एक शाबर मन्त्र साधक है या आपका ऐसा ही विचार है कि शाबर मन्त्र साधना करने का तो यह पुस्तक आपके लिए बहुत ही अनिवार्य है जिसका की अध्ययन आपको जरुर ही करना चाहिए | व् अपने शाबर मन्त्र साधक जीवन को अग्रसर करना चाहिए |
इस ईबुक के सभी मंत्र, यंत्र, यंत्र, कार्यवाही और उनके तरीकों को आज के चरम समय को देखकर हाइलाइट किया गया है, ताकि आम लोग जो भी कोई अन्य काम करते है वे भगत लोग, इस ग्रामीण ज्ञान का लाभ उठा सकते हैं। आपने आज तक कई किताबें पढ़ी हैं, जिसमें इस तरह के तरीकों का विवरण, जप और पूजा सामग्री , समय अवधि, दी जाती है कि आप केवल पढ़ने के बाद ही टूट जाते हैं और उन पुस्तकों में लिखी सभी बातो का पालन करना एक आम आदमी के लिए सम्भव भी नही होता , लेकिन इन पुस्तकों में सभी विधियां सरल हैं | पूर्व में प्रकाशित भाग 19 की तरह ही इसमें भी विभिन्न प्रकार के शाबर मन्त्रो का संग्रहं किया गया है जिससे की केवल एक ईबुक में ही आपकी समस्याओ से सम्बंधित हल व् उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हो सके | हमारा ध्येय आपकी समस्याओ का अंत, सुरक्षित, अन्न-धन से भरपूर व् खुशहाल जीवन व्यतीत करना है | आप फिर भी किसी भी प्रकार की समस्या के लिए हमे लिख सकते है |

भाषा: हिंदी मूल्य: 251 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -21 मनचाही सिद्धि

हमारे नियमित पाठकगण, साधक अक्सर हमे अपने अनुभव, प्रयोग आदि के विषय में बताते रहते है और अपनी शंकाओ के समाधान भी समय समय पर प्राप्त करते रहते है | आप अधिक जानकारी यहाँ देख सकते है >>>>Click Me>>>>

और अभी तक हमारे नियमित साधको, पाठको द्वारा ऐसी ईबुक जिसके द्ववारा मनचाही सिद्धि प्राप्त हो, सात्विक-तामसिक-देवी-देवता-भूत-प्रेत-जिन्न-परी-मुव्वकिल-मसान-मुंजा-कलवा-वीर-बेताल-आत्मा-यक्षिणी-भूतनी-चुड़ैल-पीर-सय्यद-अघोर,शमशानिक शक्तियां व् अन्य इथर शक्तियों की प्राचीन, गुप्त, प्रमाणिक शाबर साधना, तन्त्र, प्रयोग व् सिद्धि की बार बार मांग करने पर हम साधकों, पाठको के लिए **Shabar Mantra Part 21** लेकर आये है |

शाबर मन्त्र भाग 21 में आपको भूत, प्रेत, जिन्न, मसान, देवी, देवता, वीर, पीर, सय्यद, अघोर, श्मशानी शक्तिया जैसी अनेक शाबर मन्त्र साधनाए मिलेगी अर्थात प्रत्यक्षीकरण साधना मिलेगी | जिनको सिद्ध करने के बाद आप उनसे मनचाहा काम करवा सकते है| इस शाबर मन्त्र भाग 21 में बहुत सी सात्विक व् तामसिक

साधनाए दी गयी है जोकि सरल भी है और भयावह भी है | और इनको सिद्ध करने की इच्छा तो बहुत से साधक करते है लेकिन मार्गदर्शन के आभाव में वे सही दिशा की ओर साधन नही करते है तो ऐसे साधको के लिए यह शाबर मन्त्र भाग 21 अतुल्य निधि के समान अपनी अद्वितीय भूमिका निभाएगी इसी आशा, विश्वास और उम्मीद के साथ इसको ईबुक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है | ये साधनाए कमजोर दिल वाले व्यक्तियों के लिए नही है | जो इस तन्त्र क्षेत्र में है और जो इस क्षेत्र में आगे बढ़ने की सोच रखते है, जो मेहनत कर सकते है |

NOTE : यह ईबुक मनोरंजन के लिए नही है | और ना ही कोई भी कमजोर दिल के पाठक इसमें दी गयी साधना को बिना सोचे समझे, बिना किसी सक्षम गुरु के, या बिना समर्थ साधक के दिशा निर्देश में करने का प्रयास ना करे |

भाषा: हिंदी मूल्य: 1100 / -

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -22 इस्लामिक तन्त्र मन्त्र

हमारे नियमित पाठकगण, साधक अक्सर हमे अपने अनुभव, प्रयोग आदि के विषय में बताते रहते है और अपनी शंकाओ के समाधान भी समय समय पर प्राप्त करते रहते है | आप अधिक जानकारी यहाँ देख सकते है >>>>Click Me>>>>

शाबर मन्त्र संग्रह भाग -22 इस्लामिक तन्त्र मन्त्र COMING SOON ....

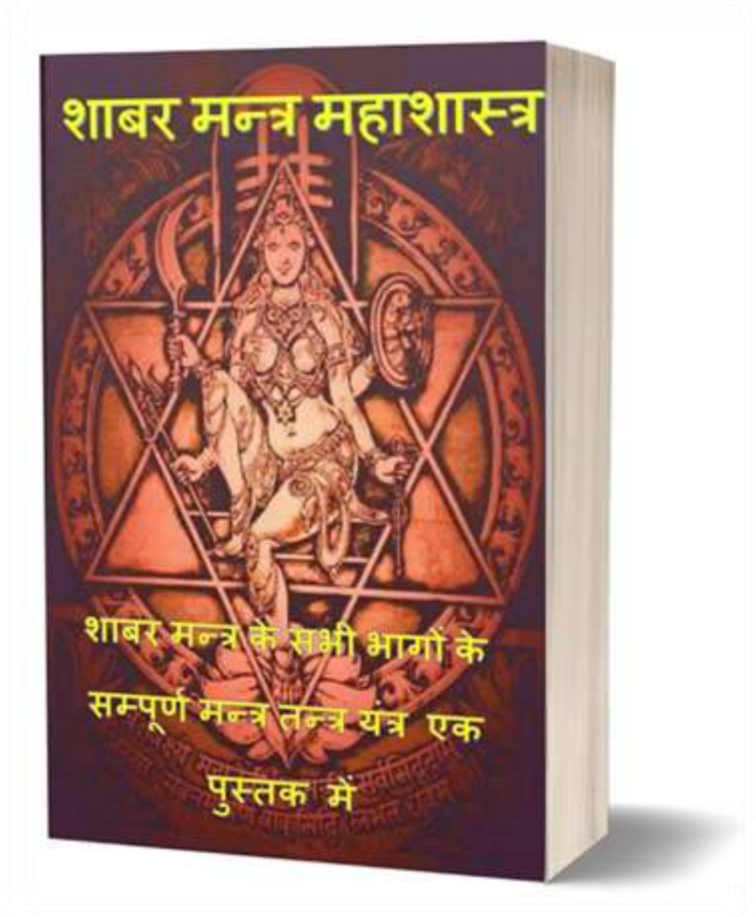
भाषा: हिंदी मूल्य: XXX / -

ईबुक कैसे डाउनलोड करें?

जैसा की आपको ज्ञात है की अभी तक हमने शाबर मन्त्र पुस्तक के कुल 21 भाग ईबुक के रूप में प्रकाशित किये है जिनका की हमारे पाठकगण बहुत लाभ ले चुके है और समय समय पर हमे सुचना देते रहते है की उन्होंने किस मन्त्र, तन्त्र आदि का प्रयोग किया, किस विषय/कार्य के लिए किया और उन्हें कैसा परिणाम मिला | और साथ ही हमारे बहुत से पाठकगण हमसे अपनी समस्याओं ईमेंल के द्वारा व् फ़ोन कॉल के द्वारा शेयर करते है और अपनी समस्याओ के उचित समाधान भी प्राप्त करते है |

अभी तक हम अपने पाठकों को सभी ईबूक्स अलग अलग भागो में भेजते थे जिसमे समय भी लगता था और कई बार बहुत से भाईयो को सभी ईबुक्स ढूंढने में भी समय लगता था अत: अब हम प्रस्तुत करते है

शाबर मन्त्र महाशस्त्र



जोकि केवल एक ही ईबुक है और इसी ईबुक में सभी **शाबर मन्त्र के भाग 1 से 22**तक के सम्पूर्ण मन्त्र-तन्त्र-यंत्र-टोटके आदि दिए गये है | जिससे की पाठकों को बार बार अलग-अलग ईबुक्स को ढूँढना, खोजना आदि परेशानियों से भी छुटकारा मिलेगा |

शाबर मन्त्र की सभी ईबुक्स भाग 1 से 21 तक का वास्तविक मूल्य : **7631/-** रूपए है | और इन ईबुक्स की कीमत पाठकों के लगातार सकारात्मक सफलता को देखते हुए समय समय पर आगे बढ़ाई जाती रही है| लेकिन अगर आप

शाबर मन्त्र महाशास्त्र (All Parts eBook 1 to 21) Pages 2000+

को अभी खरीदते है तो